

भारतीय कला में राम एवं रामकथा का अंकन

अवधेश कुमार मौर्य

पूर्व शोध छात्र, नालन्दा, बिहार

शोध निदेशिका

डॉ मीनू अग्रवाल

प्रोफेसर प्राचीन इतिहास संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग, सदनलाल सांवलदास खन्ना महिला महाविद्यालय, इलाहाबाद विश्वविद्यालय प्रयागराज।

सारांश :

साहित्य में राम कथा से संबंधित सबसे प्रसिद्ध ग्रंथ रामायण है। भारतीय कला में रामकथा का सर्वप्रथम अंकन कौशांबी में मिलता है जहां एक मूर्ति फलक पर सीता अपहरण का दृश्य अंकित है। गुप्तकालीन समाज में राम विष्णु के दस अवतारों में प्रमुख स्थान प्राप्त कर चुके थे तथा रामकथा से संबंधित अनेक दृश्य जन मानस के लिए प्रेरणास्रोत थे। राम लक्ष्मण सीता को बन जाते हुए, अहिल्या का उद्धार, राम लक्ष्मण को गुरु विश्वामित्र से धनुर्विद्या सीखने, लक्ष्मण द्वारा सूर्पनखा का नाक काटना, बालि सुग्रीव युद्ध, रावण द्वारा सीता अपहरण के दृश्य को दशावतार मंदिर की दीवारों पर बनाया गया। भीतरगाँव मंदिर कानपुर, श्रृंगवेरपुर श्रृंगवेरपुर, देवगढ़ के दशावतार मंदिर, नचना कुठार के पार्वती मंदिर, रामायण के पात्रों का अंकन है।

खजुराहो के पार्श्वनाथ मंदिर से राम, सीता, लक्ष्मण, हनुमान की प्रतिमाएं प्राप्त हुई हैं। रानी की वाव से राम की प्रतिमा का अंकन विशिष्ट

Article Publication:

Published online on: 30/12/2024

Corresponding Author:

अवधेश कुमार मौर्य

पूर्व शोध छात्र, नालन्दा, बिहार

Email: akkumarbrothers.com

©Sadanlal Sanwoldas Khanna Mahila Mahavidyalay



Scan For Paper

है। अनेक शिल्पशास्त्रीय ग्रंथों जैसे वृहत् संहिता, समरांगण सूत्रधार, शिल्परत्न, वैखानस आगम, विष्णुधर्मत्तिर पुराण, मस्त्य पुराण, अग्नि पुराण आदि में रामायण के पात्रों की प्रतिमाशास्त्रीय लक्षण स्थापित किए गए प्रस्तुत शोध अलेख में भारतीय कला में राम और रामकथा के इन्हीं कुछ उदाहरणों को प्रस्तुत किया गया है। वृहत्शोध सामग्री में से अल्प किन्तु महत्वपूर्ण कला अंकनों के उदाहरणों के कतिपय चित्रों को भी प्रस्तुत किया गया है।

मुख्य शब्द: श्रृंगवेरपुर, देवगढ़ के दशावतार मंदिर, नचना कुठार के पार्वती मंदिर, रामायण के पात्रों का अंकन, खजुराहो के पार्श्वनाथ मंदिर, रानी की बाव।

प्रस्तावना

वर्तमान में राम भारतीय जनमानस के प्रमुख देवता और आदर्श पुरुष के पर्याय माने जाते हैं। साहित्य में राम कथा से संबंधित सबसे प्रसिद्ध ग्रंथ रामायण है जिसमें राम के जीवन चरित्र को विस्तार से बताया गया है। यद्यपि रामायण से पूर्व भी राम कथा से संबंधित कुछ पात्रों का उल्लेख वेदों और उपनिषदों में प्राप्त होता है किंतु इनका वाल्मीकि रामायण से सीधा संबंध स्थापित नहीं हो पाता है। रामायण में राम के लिए दशरथिराम, रामचन्द्र, रामभद्र आदि नामों का प्रयोग किया गया है क्योंकि रामायण में राम के साथ - साथ परशुराम और बलराम का भी उल्लेख किया गया है। रामायण की रचना प्रमाणिकता को लेकर भी विद्वानों में मतभेद है। याकोबी इसकी रचना 800 से 600 ईसा पूर्व, मैकडॉनेल एवं कीथ के अनुसार 400 ईसा पूर्व तथा विण्टरनिट्स 300 ईसा पूर्व माना है। जनमानस द्वारा रामकथा को आत्मसात करने में समय लगा। लोगों में पहली दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व रामकथा का प्रचलन बढ़ने लगा। कालांतर में चलकर भारतीय मूर्ति कला और स्थापत्य में भी रामकथा का अंकन सफलतापूर्वक देखा जा सकता है।

भारतीय कला में रामकथा का सर्वप्रथम अंकन कौशांबी में मिलता है जहां एक मूर्ति फलक पर सीता अपहरण का दृश्य अंकित है यह प्रतिमा लगभग 200 ईसा पूर्व की है जो वर्तमान में इलाहाबाद संग्रहालय में सुरक्षित है। नागर्जुनकोड़ा आंध्र प्रदेश से तीसरी शताब्दी ईस्वी की एक मूर्ति फलक प्राप्त हुई है जिसमें रामायण के दो दृश्यों का अंकन है पहले दृश्य में तपस्वी वेश में राम लक्ष्मण और सीता वन गमन करते हुए तथा दूसरे में भरत द्वारा राम से अयोध्या लौट चलने का प्रसंग है। गुप्त काल के मंदिरों में राम कथा का विस्तार पूर्वक अंकन प्राप्त होने लगता है। भीतरगाँव मंदिर कानपुर से एक

फलक पर माली -सुमाली एवं माल्यवंत आदि भयानक राक्षसों के साथ राम लक्ष्मण को युद्ध करते हुए प्रदर्शित किया गया है यह प्रतिमा ब्रुकलीन संग्रहालय अमेरिका में सुरक्षित है। इसी प्रकार राम कथा से संबंधित कई मूर्तियां भी तरगावं से प्राप्त हुई हैं जिसमें अशोक वाटिका में बैठी सीता (राष्ट्रीय संग्रहालय दिल्ली) सीता के समीप बैठे कौवे की खुली चोंच (मथुरा संग्रहालय मथुरा)। श्रृंगवेरपुर से प्राप्त एक गुप्तकाल प्रस्तर फलक पर राम लक्ष्मण सुग्रीव उनके साथी तथा वानर सेना को प्रदर्शित किया गया है जो इलाहाबाद संग्रहालय में सुरक्षित है। भीतरगावं से ही सीता द्वारा रावण को भिक्षा देते हुए चित्र का अंकन प्राप्त हुआ है। इसी काल की एक प्रतिमा श्रावस्ती सहेत महेत से प्राप्त हुई है जिसमें राम के चरणों से स्पर्श पाकर श्रापित अहिल्या के उद्धार का अंकन है यह प्रतिमा मथुरा संग्रहालय में सुरक्षित है।

देवगढ़ के दशावतार मंदिर की भित्तियों पर रामायण के दृश्यों का अंकन है जिसमें राम लक्ष्मण सीता को वन जाते हुए, अहिल्या का उद्धार, राम लक्ष्मण को गुरु विश्वामित्र से धनुर्विदया सीखने, लक्ष्मण द्वारा सूर्पनखा का नाक काटना, बालि सुग्रीव युद्ध, रावण द्वारा सीता अपहरण के दृश्य को अलंकृत ढंग से उकेरा गया है। नचना कुठार के पार्वती मंदिर की भित्तियों पर लक्ष्मण द्वारा सूर्पनखा की नाक काटना, सुग्रीव बालि युद्ध एवं रावण द्वारा सीता का अपहरण जैसे चित्रों का अंकन है।

उपरोक्त मूर्ति फलकों पर उकेरे गए चित्रों के माध्यम से यह स्पष्ट होता है कि गुप्तकालीन समाज में राम विष्णु के दस अवतारों में प्रमुख स्थान प्राप्त कर चुके थे तथा रामकथा से संबंधित अनेक दृश्य जन मानस के लिए प्रेरणास्रोत थे। गुप्तोत्तर काल में राम कथा एवं राम की स्वतंत्र पूजा का सर्वत्र प्रसार हो चुका था। पूर्व मध्यकाल एवं मध्यकाल दोनों कालों में साहित्य एवं कलाकृतियों में रामयण से संबंधित दृश्यांकों का प्रचलन हुआ इसी समय अनेक शिल्पशास्त्रीय गंथों जैसे वृहत् संहिता, समरांगण सूत्रधार, शिल्परत्न, वैखानस आगम, विष्णुधर्मार्जित पुराण, मस्त्य पुराण, अग्नि पुराण आदि में रामायण के पात्रों की प्रतिमाशास्त्रीय लक्षण स्थापित किए गए। मूर्ति कला में भी इन प्रतिमाशास्त्रीय लक्षणों का प्रयोग करके मूर्तियां अंकित की गईं। मस्त्य पुराण में राम की प्रतिमा की ऊँचाई 10 ताल या 120 अंगुल बनाने का विधान है। इसी प्रकार बृहद संहिता, मानसोल्लास शिल्परत्न में भी 120 अंगुल या 10 ताल में राम की मूर्ति बनाने का विधान मिलता है। शिल्परत्न में राम को किरीट मुकुट, कानों में कुंडल, गले में हार आदि आभूषणों से युक्त बताया गया है। राम का रंग कृष्ण मेघ के समान नीलकमल के सदृश्य बताया गया है। इस ग्रंथ में राम को सिंहासन पर विराजमान बार्यीं ओर

सीता तथा अगल - बगल सुग्रीव हनुमान आदि वानर सेना तथा वशिष्ठ एवं विश्वामित्र आदि मुनियों के साथ विचार विमर्श करते हुए दर्शाया गया है। समरांगण सूत्रधार में राम को द्विभुजी चतुर्भुजी तथा अष्टभुजी बताया गया है।

आठवीं शताब्दी में राष्ट्रकूट शासकों द्वारा बनाए गए दशावतार मंदिर एवं कैलाश नाथ मंदिर की भित्तियों पर रामायण के कई दृश्यों का अंकन है। कैलाश नाथ मंदिर के सभा भवन की दक्षिणी दीवार पर रामायण पैनल बनाया गया है जिसमें राम वनगमन, भरत मिलाप, सीता अपहरण, रावण जटायु युद्ध तथा बालि - सुग्रीव युद्ध का अंकन किया गया है। चालुक्य कालीन एहोल के दुर्गा मंदिर एवं पट्टदकल के विरूपाक्ष मंदिर एवं पापनाथ मंदिरों की भित्तियों पर रामायण के विषयों को उकेरा गया है। पापनाथ मंदिर की भित्ति पर दशरथ द्वारा पुत्र प्राप्ति के लिए यज्ञ करने के दृश्य से लेकर रावण वध तक की घटनाओं का अंकन किया गया है यह दृश्यांकन लगभग छठवीं सातवीं ईस्वी की है। पल्लव शासन काल की कलाकृतियों में भी रामायण के पात्रों का अंकन प्राप्त होता है महाबलीपुरम के विष्णु मंदिर से राम तथा अंजलिबद्ध मुद्रा में हनुमान की प्रतिमा प्राप्त हुई है इसके अलावा रावण द्वारा कैलाश पर्वत उठाने का दृश्य प्राप्त होता है। चोल राजवंश के मंदिरों में भी रामायण तथा रामकथा से संबंधित अनेक घटनाओं का उल्लेख मिलता है इस काल में कांस्य की बनी श्री राम, सीता, लक्ष्मण तथा हनुमान की मूर्तियां प्राप्त हुई हैं जो वर्तमान में चेन्नई संग्रहालय में सुरक्षित हैं। द्वारसमुद्र के होयशल राजाओं द्वारा बनवाए गए मंदिरों में चन्न केशव मंदिर, होयसलेश्वर मंदिर, लक्ष्मी नारायण मंदिर, मल्लिकार्जुन मंदिर आदि में राम कथाओं का सुंदर अंकन किया गया है।

पूर्व मध्यकालीन चंदेल गहड़वाल और प्रतिहार राजाओं द्वारा बनवाए गए मंदिरों में राम कथा का अंकन हुआ है खजुराहो के पार्श्वनाथ मंदिर से राम, सीता, लक्ष्मण, हनुमान की प्रतिमाएं प्राप्त हुई हैं। धनुर्धरी राम और पास में खड़ी सीता की एक मूर्ति खजुराहो से प्राप्त हुई है जो वर्तमान में ग्वालियर संग्रहालय में सुरक्षित है। खजुराहो से नौवीं शताब्दी की एक स्वतंत्र हनुमान की प्रतिमा प्राप्त हुई है जो मंदिर समूह से कुछ दूरी पर स्थित हनुमान मंदिर में स्थापित है। छत्तीसगढ़ के राजनांदगांव जिले में घटियारी और गंडई जैसे कलात्मक मंदिरों का निर्माण हुआ इन मंदिरों में रामकथा और महाभारत से संबंधित अनेक दृश्यांकन प्राप्त होते हैं। गंडई मंदिर के उत्तरी दीवार से रामायण के कथानकों जिसमें राम लक्ष्मण एवं हुनमान के मध्य चर्चा, बालि - सुग्रीव युद्ध, राम द्वारा बालि का वध, राम लक्ष्मण के सम्मुख सूर्पनखा द्वारा प्रणय निवेदन, सीता का अशोक वाटिका में शोकाकुल बैठना तथा लंका विजय के बाद बंदरों का हर्षोल्लास में कूदना आदि महत्वपूर्ण है। गुजरात

के चालुक्य वंशीय राजाओं के समय बनी रानी की बाव तकनीकी और कला में सर्वाधिक उत्कृष्ट है। इस संरचना में स्तम्भों और दीवारों पर विष्णु और उनके अवतारों से संबंधित दृश्य का अंकन किया गया है।

निष्कर्ष

उपरोक्त विवरण का अध्ययन करने के बाद निष्कर्ष रूप में हम कह सकते हैं कि भारतीय समाज एवं धर्म में रामकथा की ऐतिहासिकता ईसा पूर्व की शताब्दियों से प्रारंभ होकर वर्तमान तक मानी जाती है। वर्तमान समय में राम विष्णु के सातवें अवतार के रूप में पूजे जाते हैं। धर्म के साथ - साथ समाज में दशरथिराम का आदर्श जीवन लोगों के लिए प्रेरणा स्रोत रहा है, यही कारण है कि दशावतारों में राम अधिक प्रासंगिक माने जाते हैं।

चित्र संख्या (1) लक्ष्मण द्वारा सूर्पनखा का नाक काटना दशावतार मंदिर, देवगढ़ (उ.प्र.)।



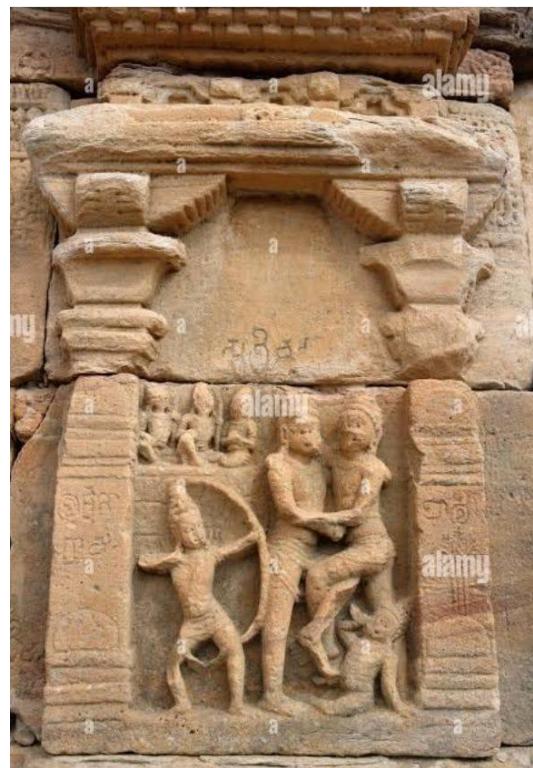
चित्र संख्या (2) वानर सेना द्वारा रामसेतु निर्माण, पापनाथ मंदिर पट्टदक्कल



चित्र संख्या (3) बाली सुग्रीव युद्ध, पापनाथ मंदिर पट्टदकल



चित्र संख्या (4) राम द्वारा बालि की हत्या, पापनाथ मंदिर पट्टदकल



चित्र संख्या (5) राम - रावण युद्ध, पापनाथ मंदिर पट्टदक्कल



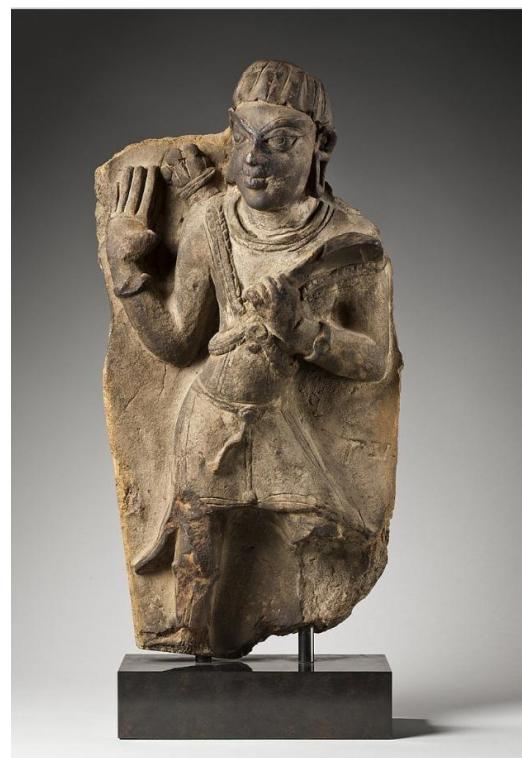
चित्र संख्या (6) रावण - जटायु युद्ध, पापनाथ मंदिर पट्टदक्कल



चित्र संख्या (7) रामायण पैनल कैलाश नाथ मंदिर एलोरा



चित्र संख्या(8) राम की टेरा कोटा मूर्ति, नचरखेड़ा हरियाणा 5 वीं सदी



चित्र संख्या (9) राम - रानी की बाव पाटन, गुजरात



चित्र संख्या (10) सीता द्वारा रावण को भिक्षा देना, भीतरगाँव कानपुर



संदर्भ ग्रंथ सूची:-

- राव, टी ए गोपीनाथ (1968) एलिमेंट्स ऑफ हिंदू आइकोनोग्राफी, वॉ. 1, पार्ट 1, मोतीलाल बनारसी दास इंडोलॉजिकल पब्लिशर्स दिल्ली.
 - बनर्जी, जे. एन. द डेवलपमेंट ऑफ हिंदू आइकोनोग्राफी, यूनिवर्सिटी ऑफ कोलकाता.
 - अवस्थी, रामाश्रय (1967) खजुराहो की देव प्रतिमाएं, ओरिएंटल पब्लिशिंग हाउस आगरा.
 - मिश्र, इंदुमती (2009) प्रतिमा विज्ञान, मध्य प्रदेश हिंदी गं.रथ अकादमी, भोपाल.
 - उपाध्याय (1982) वासुदेव, प्राचीन भारतीय मूर्ति विज्ञान, चौखंबा विद्या भवन, वाराणसी.
 - भंडारकर (2019) रामकृष्ण गोपाल, वैष्णव शैव और अन्य धार्मिक मत, भारतीय विद्या प्रकाशन, वाराणसी.
 - बुल्के, कामिल (1962), राम कथा, उत्पत्ति और विकास, हिन्दी परिषद प्रकाशन, प्रयाग.
 - मूर्ति, सी शिवराम (1980) द रामायण इन इंडिया स्कल्पचर, नई दिल्ली.
 - गुप्त, आर. सेन (1971-72) जर्नल ऑफ द आंश्व हिस्टोरिकल रिसर्च सोसायटी, भाग 1.
 - दूबे, सीताराम, घटियारी और गंडई क्षेत्र की प्रतिनिधि प्रतिमाओं का शिल्प शास्त्रीय विवेचन.
 - सोमदेवकृत मानसोल्लास (1950) गायकवाड, ओरिएंटल सीरीज, बड़ौदा.
 - शिल्परत्न (1922). श्री कुमार, त्रिवेंद्रम सीरीज.
 - वृहत्संहिता (1880). सरस्वती प्रेस, कलकत्ता.
 - समरांगण सूत्रधार (1925). त्रिवेंद्रम संस्कृत सीरीज त्रिवेंद्रम.
 - विष्णुधर्मोत्तर पुराण, क्षेमराज श्री कृष्ण दास द्वारा प्रकाशित, वेंकटेश्वर प्रेस मुम्बई.
 - वाल्मीकीय रामायण, गीता प्रेस, गोरखपुर .
 - कालिदास कृत रघुवंशम (1961) चौखंबा संस्कृत सीरीज, चौक, वाराणसी.
- Google.com/Images
 - <https://content.lib.washington.edu>
 - facebook.com/ICHR.Group

आभार

सभी चित्र गूगल से साभार ग्रहीत हैं।